विश्व न्याय मन्दिर

28 दिसम्बर 2010

महाद्वीपीय सलाहकारों के मण्डलों के सम्मेलन को सम्बोधित

परम प्रिय मित्रों,

1. 15 वर्ष पूर्व, पावन भूमि में ऐसे ही एक अवसर पर एकत्र होने वाले सलाहकारों के समूह को हमने उस पथ का पहला संकेत दिया था, जो बहाई समुदाय को उसके विस्तार और सुगठन की दोहरी प्रक्रिया की गति बढ़ाने के लिये अपनाना होगा -- एक ऐसा पथ, जिस पर विश्वास के साथ आगे बढ़ने के लिये उसके संचित अनुभवों ने उसे तैयार किया है। डेढ़ दशक जितने कम समय में तय की गयी दूरी पर टिप्पणी करने की जरुरत नहीं है। उपलब्धियों का इतिहास अपनी बात स्वयं बता रहा है। आज हम आपको उस महान कार्य के अगले चरण के विषय में विचार विमर्श आरम्भ करने के लिये आमंत्रित करते हैं जिसमें बहाई जगत जुटा हुआ है, एक ऐसा चरण जो रिज़वान 2011 से रिज़वान 2016 तक जारी रहेगा तथा, एक के बाद एक, आने वाली दो पाँच-वर्षीय योजनाओं में से पहली योजना गठित करेगा। ये योजनाएँ प्रभुधर्म के रचनात्मक काल के शुभारम्भ की शताब्दी पर समाप्त होंगी। आने वाले दिनों में आपसे यह स्पष्ट अवधारणा तैयार करने को कहा जा रहा है कि सलाहकार और उनके सहायकगण, समुदाय को उसकी असाधारण उपलब्धियों के आधार पर आगे बढ़ने में किस प्रकार सहायता करेंगे-जैसे कि कार्य के अन्य क्षेत्रों में भी सीखने की वह मनोदशा अपनाना जो इतने अकाट्य रूप से उसके शिक्षण प्रयासों की विशेषता बन चुकी है, वह क्षमता प्राप्त करना जो उन साधनों एवं पद्धतियों का अधिकाधिक सामंजस्य के साथ उपयोग करने के लिये आवश्यक है जो, उसने इतने परिश्रम के साथ विकसित किये हैं और पिछली सभी संख्या की तुलना में उन लोगों को कहीं अधिक बढ़ाना, जो प्रभुधर्म की दूरदर्शी-झलक के प्रति जागरूक होकर, उसके ईश्वर-प्रदत्त लक्ष्य की प्राप्ति के प्रयास में इतनी मेहनत से परिश्रम कर रहे हैं।

2. इस वर्ष के हमारे रिज़वान संदेश में, हमने सीखने की उस प्रक्रिया की गत्यात्मकता का वर्णन किया था जिसने लगातार चार वैश्विक योजनाओं के दौरान दृढ़ता से जोर पकड़ा है, जिसके कारण, स्थानीय गतिविधि में संलग्न होने की मित्रों की क्षमता बढ़ी है। इस श्रेष्ठ स्थल से दिखायी देने वाला दृश्य वास्तव में भव्य है। विश्व में 350,000 से भी

अधिक लोग हैं जिन्होंने संस्थान का प्रथम पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है, जिससे एक ऐसी जीवन-शैली को आकार देने की क्षमता में स्पष्ट वृद्धि हुई है जो अपने भक्तिमय स्वरूप के कारण विशिष्ट है। प्रत्येक महाद्वीप में विविध परिवेश में अनुयायियों के समूह दूसरों के साथ प्रार्थना में जुड़ रहे हैं, अपने हृदयों को याचना में अपने सृजनकर्ता की ओर उन्मुख कर रहे हैं, और अपनी सहायता के लिये उन आध्यात्मिक शक्तियों का आह्वान कर रहे हैं, जिन पर उनके व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों की प्रभावोत्पादकता निर्भर है। बहाई बच्चों की कक्षा के शिक्षकों का संरक्षित समूह लगभग दुगना हुआ है और इनकी कुल संख्या लगभग 130,000 हो गई है, जिससे, समुदाय पूरे हृदय से बच्चों की आध्यात्मिक अभिलाषाओं को पूरा कर सकते हैं। इसी अवधि के दौरान, किशोरों को उनके जीवन के इतने निर्णायिक दौर से गुजरने में सहायता करने की क्षमता का छः गुना बढ़ना, उस आयु वर्ग के प्रति प्रतिबद्धता का संकेत देता है। इससे भी बढ़कर यह है कि सभी जगह, विभिन्न पृष्ठभूमियों और रुचि के लोगों के साथ बातचीत शुरू करने के लिये और उनके साथ वास्तविकता की एक ऐसी खोज प्रारम्भ करने के लिये मित्रों की एक उल्लेखनीय संख्या स्वयं को तैयार पाती है, जो मानव इतिहास के इस दौर की आवश्यकताओं के बारे में तथा इन्हें पूरा करने वाले साधनों के बारे में एक साझी समझ उत्पन्न करती है और अध्ययनवृत कक्षाओं के ट्यूटर के रूप में सेवा देने वाले लगभग 70,000 मित्रों के प्रयास विश्व में उन मूल गतिविधियों की सुनियोजित वृद्धि को बढ़ावा दे रहे हैं, जिनमें एक समय में कम-से-कम पाँच लाख ज्ञात प्रतिभागी भाग ले रहे होते हैं।

3. जैसा हमारे रिज़वान संदेश में स्पष्ट किया गया है, अपने मानव संसाधनों का विकास करने के लिये, 'सर्वमहान नाम' के समुदाय के पास, इस प्रकार बनाई गई प्रणाली के रूप में एक असीम अन्तःशक्तिपूर्ण साधन है। लगभग किसी भी क्लस्टर में, विस्तृत विविधतामय परिस्थितियों में, व्यक्तियों के एक वृद्धिगत नाभिकीय के लिये सम्भव है कि वह नई विश्व व्यवस्था की दिशा में एक गमन उत्पन्न करे। एक दशक पूर्व, जब हमने एक क्लस्टर -- एक ऐसा भौगोलिक क्षेत्र जिसका उद्देश्य प्रभुधर्म के विकास के बारे में विचार प्रक्रिया को सुगम करना है -- की अवधारणा प्रस्तुत की थी, तब हमने मोटे तौर पर उसके विकास के पथ के चार व्यापक विस्तृत चरणों की रूपरेखा प्रदान की थी। जब बहाई समुदाय ने योजना के प्रावधानों को लागू करना शुरू किया तो यह रूपरेखा उस प्रक्रिया को आकार एवं स्पष्टता देने में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई जो अनिवार्यतः एक अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। तब से अब तक प्राप्त किया गया प्रचुर अनुभव

अनुयायियों को इस योग्य बनाता है कि वे बढ़ती हुई आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा आगे बढ़ाये जाने वाले जन-समुदाय के गमन को एक समृद्ध और गत्यात्मक अटूट क्रम समझें। यद्यपि एक क्लस्टर में समय के साथ-साथ खुलने वाली प्रक्रिया से आप भलीभाँति परिचित हैं, फिर भी इसकी एक संक्षिप्त समीक्षा करने से इसके आधारभूत जैविक-स्वरूप पर बल देने में सहायता मिलेगी।

विकास का एक कार्यक्रम

4. सदैव ही, स्थानीय निवासियों के साथ अर्थपूर्ण एवं विशेष वार्तालाप करने के लिए आरम्भ में सम्मिलित होने वाले अनुयायियों को -- या सम्भवतः एक होमफ्रंट पायनियर को -- व्यक्तिगत परिस्थितियों से मिलने वाले अवसर इस बात को निर्धारित करते हैं कि एक क्लस्टर में विकास की प्रक्रिया कैसे आरम्भ होती है। कुछ मित्रों या सहकर्मियों से बनी हुई एक अध्ययनवृत कक्षा, मोहल्ले के कई बच्चों के लिये आयोजित की गयी कक्षा, स्कूल के बाद के समय में किशोरों के लिये स्थापित किया गया एक किशोर-समूह, परिवारजनों और मित्रों के लिये घर पर आयोजित की गयी एक भक्तिपरक बैठक -- इनमें से कोई भी विकास के लिये एक प्रेरक के रूप में काम कर सकती है। इसके बाद जो होता है उसका कोई पूर्वनिर्धारित मार्ग नहीं होता। स्थितियाँ इस बात को उचित सिद्ध कर सकती हैं कि उस मूल गतिविधि को प्राथमिकता दी जाये जो दूसरों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ रही हो। यह भी सम्भव है कि चारों गतिविधियाँ एक तुलनात्मक गति से आगे बढ़ें। नवजात गतिविधियों को गतिबल प्रदान करने के लिये एक भ्रमण समूह की सहायता ली जा सकती है। विशेषताएँ चाहे कुछ भी हों, परिणाम वही होना चाहिये। प्रत्येक क्लस्टर में मूल गतिविधियों के बीच प्राप्त की गयी एकजुटता का स्तर ऐसा होना चाहिये कि इनके कुल योग में प्रभुधर्म के निरंतर विस्तार और सुगठन का एक आरम्भ होता हुआ कार्यक्रम दिखायी दे सके। कहने का अर्थ यह है कि, किसी भी मिश्रण और कितनी भी छोटी संख्या में, भक्तिपरक बैठकों, बच्चों की कक्षाओं तथा किशोर समूहों को, वे सतत् बनाये हुए हैं जो, संस्थान पाठ्यक्रमों के अनुक्रम में प्रगति करते जा रहे हैं, और अपने द्वारा पोषित व्यक्तिगत व सामूहिक रूपांतरण की परिकल्पना के प्रति प्रतिबद्ध हैं। सुनियोजित कार्य के क्षेत्र में मानव संसाधनों का यह प्रारम्भिक प्रवाह, सतत् विकास की प्रक्रिया में आने वाले उन अनेक मील के पत्थरों में, सबसे पहले मील के पत्थर का सूचक है।

5. वर्तमान में चल रही वैश्विक योजनाओं की श्रृंखला के लक्ष्य को बढ़ावा देने वाली सभी संस्थाओं और एजेंसियों को उस स्फूर्ति से काम लेना होगा, जो इस तरह की गत्यात्मक

प्रक्रिया के जन्म के लिए आवश्यक है -- लेकिन इनमें सहायक मण्डल सदस्यों को सबसे अधिक। इस प्रथम महत्वपूर्ण मील के पत्थर की तथा इस तक पहुँचने के विविध तरीकों की एक परिकल्पना बनाने में मित्रों की सहायता करना प्रत्येक सहायक मण्डल सदस्य का तथा उसके सहायकों की एक बढ़ती हुई संख्या का प्रमुख कार्य है। उनके सभी कार्यों की तरह ही, इसमें भी उन्हें दृष्टि का विस्तार और विचारों की स्पष्टता, लचीलापन एवं संसाधन- कुशलता प्रदर्शित करनी चाहिये। मेहनत और आनन्द में भाग लेने के लिये, उन्हें मित्रों के साथ, कंधे से कंधा मिलाकर खड़े होना चाहिये। गतिविधि के मामले में, इनमें से कुछ मित्र तेजी से आगे आ जाएँगे, जबकि अन्य मित्र कुछ हिचकिचाहते हुए कदम बढ़ाएंगे; फिर भी, सभी को ऐसे समर्थन एवं प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है जो काल्पनिक रूप से नहीं बल्कि उस सुपरिचित ज्ञान के आधार पर दिया जाता है, जो केवल सेवा के क्षेत्र में साथ-साथ काम करने से प्राप्त होता है। सेवा करने की चाह प्रकट करने वाले प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता में विश्वास रखना उन लोगों के प्रयासों के लिये महत्वपूर्ण सिद्ध होगा, जिन्हें योजना में अनुयायियों की पूरी-पूरी सहभागिता प्राप्त करनी है। यदि वे हिचकिचाहट को उस साहस में बदलने में सहायता करना चाहते हैं जो ईश्वर में विश्वास रखने से उत्पन्न होता है, और जोश को एक दीर्घकालिक क्रिया की प्रतिबद्धता में परिवर्तित करना चाहते हैं, तो पैतृकवाद से मुक्त, बिना शर्त का प्रेम अत्यावश्यक होगा। जब वे यह दिखाने का प्रयास करें, कि ठोकर लगाने वाले पत्थरों को प्रगति की सीढ़ी के पत्थर कैसे बनाया जा सकता है, तो शांत दृढ़ता अत्यावश्यक होगी। और बढ़े हुए आध्यात्मिक बोध के साथ सुनने की तत्परता, एकीकृत कार्यवाही की अनिवार्यता को समझने से कुछ मित्रों को रोकने वाली बाधाओं को पहचानने के लिये, अनमोल सिद्ध होगी।

वृद्धिगत प्रबलता

6. यह महत्वपूर्ण है कि जब एक विकास कार्यक्रम अस्तित्व में लाया जा रहा होता है, तब अस्तित्व में आने वाली एक सामुदायिक चेतना, घटनाओं की दिशा पर अपना प्रभाव डालने लगती है। चाहे गतिविधियाँ पूरे क्लस्टर में फैली हुई हों या किसी एक गाँव या मोहल्ले में केन्द्रित हों, हर हाल में एक सामूहिक उद्देश्य का बोध मित्रों के प्रयासों की विशेषता होता है। इस चेतना के आरम्भिक प्रदर्शन का माध्यम बनने वाले व्यवस्थापन का स्तर कुछ भी रहा हो, लेकिन मूल गतिविधियों की सुनियोजित, समन्वित वृद्धि यह

अनिवार्य बना देती है कि शीघ्र ही और भी ऊँचे स्तर प्राप्त कर लिये जाएँ। विभिन्न उपायों के माध्यम से, गतिविधि को और अधिक ढाँचा प्रदान किया जा रहा है, और वह पहल, जो पूर्व में काफी हद तक व्यक्तिगत इच्छा द्वारा आकार प्राप्त किया करती थी, अब सामूहिक रूप से अभिव्यक्त की जाती है। संस्थान द्वारा नियुक्त किये गये संयोजकों का एक पूरक दस्ता स्थान लेता है -- जैसे कि अध्ययनवृत कक्षा के संयोजक, किशोर समूहों के संयोजक, और बच्चों की कक्षाओं के संयोजक। ऐसी नियुक्ति किसी भी क्रम में सम्भावित रूप से वैध होती है। इसका निर्धारण केवल स्थानीय स्तर की परिस्थितियों की एक सूक्ष्म जानकारी से ही किया जाना चाहिये, क्योंकि जो दाँव पर लगा है वह कुछ प्रक्रियाओं का अनुपालन नहीं, बल्कि एक ऐसी संयोजक प्रक्रिया का खुलना है जिसने, बड़ी संख्याओं में लोगों के आध्यात्मिक सशक्तिकरण करने की अपनी क्षमता को दिखाना प्रारम्भ कर दिया है।

7. संस्थान प्रक्रिया को समर्थन देने वाले तंत्रों की स्थापना के साथ-साथ, अन्य प्रशासनिक ढाँचे भी धीरे-धीरे आकार प्राप्त कर रहे हैं। कुछ अनुयायियों की यदा-कदा होने वाली बैठकों से, मित्रों के एक बढ़ते हुए कोर ग्रुप के नियमित विचार-विमर्श उभरते हैं, जो ऊर्जा के एक बढ़ते हुए भण्डार को सेवा के क्षेत्र में प्रणालित करने से सम्बन्धित होते हैं। जैसे-जैसे विकास की प्रक्रिया जोर पकड़ना जारी रखती है, वैसे-वैसे योजना बनाने एवं निर्णय लेने की मांगों को पूरा करने में ऐसी व्यवस्था अन्ततः विफल हो जाती है, और एक क्षेत्रीय शिक्षण समिति का गठन किया जाता है, और समीक्षा बैठकें संस्थायित की जाती हैं। समिति, संस्थान एवं सहायक मण्डल सदस्यों की संयुक्त पारस्परिक क्रियाओं में, गतिविधियों के समन्वय की एक पूर्ण रूप से विकसित व्यवस्था क्रियाशील हो जाती है -- जिसमें मार्गदर्शन, कोष, एवं जानकारी के कुशल प्रवाह को सुविधाजनक बनाने के लिये आवश्यक सम्पूर्ण क्षमता निहित होती है। क्लस्टर में विकास की प्रक्रिया अब तक उस ताल के अनुसार चलने लगेगी जो विस्तार और सुगठन के उन स्पष्ट चक्रों द्वारा स्थापित किया जा चुका होगा, जो हर तीन महीने के बाद समीक्षा करने एवं योजना बनाने की एक बैठक के लिये, बीच में रुकते हुए, निर्विघ्न खुलते जा रहे हैं।

8. यहाँ एक बार फिर, सहायक मण्डल सदस्यों एवं क्षेत्रीय परिषद और संस्थान मण्डल जैसी अन्य सम्बद्ध संस्थाओं एवं एजेंसियों को यह सुनिश्चित करना होगा कि क्लस्टर में विकसित हो रहे प्रशासनिक ढाँचे अपेक्षित विशेषताएँ धारण कर लें। विशेषकर, सभी

जगह संस्थानों के उपयोग के लिये पाठ्यक्रमों की जिस श्रृंखला की हमने अनुशंसा की है, जो वर्तमान में जारी रूपान्तरण की प्रक्रिया को इतने प्रभावशाली ढंग से सुगम बना रही है, उसको एक ऐसा वातावरण निर्मित करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है जो तत्काल सभी की भागीदारी, आपसी सहयोग एवं सहायता में सहायक है। इस वातावरण में उन सभी व्यक्तियों के बीच के सम्बन्धों के स्वरूप के बारे में, जो स्वयं को सेवा के एक सार्व पथ पर चलते हुए देखते हैं, हमारे रिज़वान संदेश में संक्षेप में बताया गया था। हमने यह संकेत भी दिया था कि ऐसा वातावरण, प्रभुधर्म के प्रशासनिक गतिविधियों पर अपना प्रभाव डाले बगैर नहीं रहता। जब अनुयायियों की एक बढ़ती हुई संख्या सीखने के एक विनम्र भाव के साथ शिक्षण एवं प्रशासनिक कार्य में भाग ले, तो उन्हें प्रत्येक कार्य को, प्रत्येक पारस्परिक क्रिया को प्रगति प्राप्त करने के प्रयास में हाथ मिलाने के तथा प्रभुधर्म की सेवा के अपने प्रयासों में एक-दूसरे का साथ देने के अवसर के रूप में देखना चाहिये। इस प्रकार अति-निर्देशित करने का आवेग शांत हो जायेगा। इस प्रकार परिवर्तन की एक जटिल प्रक्रिया को एक ऐसे सरलीकृत क्रम में परिवतर्तित कर देने की प्रवृत्ति दूर हो जायेगी, जो पुस्तिका से निर्देश देने योग्य होती है। असतत् क्रियाओं को संदर्भ में रखा जाता है, और छोटे से छोटा कदम भी अर्थ-सम्पन्न होता है। सेवा के क्षेत्र में आध्यात्मिक शक्तियों का प्रभाव भी अधिक से अधिक स्पष्ट होने लगता है, तथा मित्रता के वे बंधन, जो विकास के एक स्वस्थ प्रतिमान में इतने महत्वपूर्ण होते हैं, निरन्तर सुदृढ़ बनते जाते हैं।

9. स्पष्ट होने वाली प्रक्रियाओं, उभरने वाले ढाँचों और चिरस्थायी भाईचारे के इस परिदृश्य में, वह पल-जिसे एक सघन विकास कार्यक्रम के “आरम्भ” के रूप में जाना जाने लगा है, जो इस सचेत स्वीकृति को दर्शाता है कि प्रभुधर्म के विस्तार और सुगठन को तीव्रता से बढ़ाने के लिये आवश्यक सभी तत्व, न केवल अपने स्थान पर उपस्थित हैं वरन्, प्रभावशालीता के एक पर्याप्त स्तर पर कार्य कर रहे हैं। यह एक जन समुदाय के लिए आध्यात्मिक शिक्षा की सदैव प्रगति करने वाली, आत्मनिर्भर प्रणाली की परिपक्वता का संकेत देता है: मित्रों का एक स्थायी प्रवाह, प्रशिक्षण संस्थान के पाठ्यक्रमों के अध्ययन में आगे बढ़ता है और सम्बद्ध गतिविधियों में संलग्न होता है, जिसके बदले में प्रभुधर्म में भर्ती होने वाले नये लोगों की संख्या बढ़ जाती है जिनका एक अर्थपूर्ण प्रतिशत, अवश्यम्भावी रूप से संस्थान प्रक्रिया में प्रवेश करता है, जिसके परिणाम स्वरूप इस

व्यवस्था का विस्तार सुनिश्चित होता है। यह एक और मील का पत्थर है जिस तक, समय के साथ-साथ प्रत्येक क्लस्टर में परिश्रम करने वाले मित्र अवश्य पहुँचेंगे।

10. आशा है कि, पिछले अवसरों पर हमने जो कुछ भी कहा है उनमें से अधिकांश बातों को यहाँ दोहराने से हम इस बात पर बल दे पाये हैं कि प्रभुधर्म के उद्देश्य और सिद्धान्तों से प्रेरित होने वाले किसी जन समुदाय के गमन को तब कितनी सरलता से बढ़ावा दिया जा सकता है जब उसे असम्बद्ध जटिलताओं की वस्तु न बना दिया जाये। हमें यह भ्रम नहीं है कि इतने संक्षेप में ऊपर अनुरेखित किया गया पथ कठिनाई-रहित होगा। प्रगति, संकट और विजय की द्वंदात्मक पद्धति के माध्यम से प्राप्त होती है, और रुकावटें निश्चित हैं। सहभागिता में गिरावट, गतिविधि के चक्रों में विघ्न, एकता के बंधनों में क्षणिक दरार -- ये उन अनगिनत चुनौतियों में से कुछ हैं जिनका सामना करना पड़ सकता है। मानव संसाधनों की वृद्धि, या उन्हें संघटित करने की क्षमता प्रायः तीव्र गति से विस्तार की माँगों को पूरा नहीं कर पाएँगे। फिर भी, इस प्रक्रिया पर फार्मूले लागू करने से विकास का वह प्रतिमान उत्पन्न नहीं होगा जिसमें वांछित संतुलन का गुण हो। विभिन्न गतिविधियों की प्रगति में अल्पकालिक असंतुलन आना इस प्रक्रिया में स्वाभाविक है, और यदि इन असंतुलनों को धैर्यपूर्वक हल किया गया तो, समय के साथ-साथ इन्हें ठीक किया जा सकता है। संतुलित विकास प्राप्त करने की सैद्धान्तिक समझ के आधार पर किसी फलने-फूलने वाली गतिविधि को कम कर देना अक्सर प्रतिकूल साबित होता है। यद्यपि एक क्लस्टर में मित्रगण उन लोगों के अनुभव से बहुत लाभ प्राप्त कर सकते हैं जिन्होंने गतिविधि का आवश्यक प्रतिमान स्थापित कर लिया है, फिर भी, वे केवल अपनी ओर से निरन्तर कार्य, समीक्षा और परामर्श करते रहने से ही अपनी स्वयं की वास्तविकता को समझ पाएँगे, अपनी स्वयं की सम्भावनाओं को देख सकेंगे, अपने स्वयं के संसाधनों का उपयोग कर सकेंगे, और आने वाले वृहत-स्तरीय विस्तार एवं सुगठन की अनिवार्यताओं को पूरा कर सकेंगे।

11. आज, दुनिया भर में कुछ 1,600 क्लस्टर हैं जहाँ मित्रों ने कार्य का वह प्रतिमान उत्पन्न करने में सफलता प्राप्त कर ली है जो एक सघन विकास के कार्यक्रम से जुड़ा होता है। यद्यपि यह उपलब्धि उल्लेखनीय है, फिर भी किसी भी हाल में इसे उस प्रक्रिया का शिखर नहीं समझा जा सकता जो प्रत्येक क्लस्टर में जोर पकड़ चुकी है। अब मित्रों के समक्ष सीखने की नई सीमाएँ खुल गयी हैं, और उनसे कहा जा रहा है कि वे अपनी ऊर्जाओं को ऐसे जीवंत समुदाय निर्मित करने में समर्पित करें जिनका आकार बढ़ रहा हो

और जो मानवजाति के लिये बहाउल्लाह की संकल्पना के विषय में अधिकाधिक विचार कर रहे हों। ऐसे क्लस्टरों को ऐसे सम्भावित पायनियरों के एक खजाने के रूप में भी उपयोग में आना आवश्यक होगा, जिन्हें मुख्य रूप से प्रदेश के भीतर, क्लस्टर दर क्लस्टर भेजा जा सके, जिससे इनमें से कुछ क्लस्टरों में 'उनके प्रकटीकरण' की पहली किरणें फैलायी जा सकें तथा अन्य में प्रभुधर्म की उपस्थिति को सुदृढ़ किया जा सके, जिससे कि सभी को विकास के पथ के प्रथम मील के पत्थर तक, या उससे भी परे प्रगति करने में समर्थ बनाया जा सके। इस बात को ध्यान में रखते हुए, रिज़वान 2011 में हम 'सर्वमहान नाम' के समुदाय का आह्वान करेंगे कि अगले पाँच वर्षों में वे उन क्लस्टरों की कुल संख्या को बढ़ाकर 5,000 कर दें जिनमें, गहनता के किसी भी स्तर पर एक सघन विकास कार्यक्रम चल रहा है, यह संख्या विश्व के वर्तमान सभी क्लस्टरों का लगभग एक-तिहाई हिस्सा है।

सीखने की सीमाओं को आगे बढ़ाना

12. हमने पिछले अनुच्छेदों में और डेढ़ दशक के इतने संदेशों में जो कहा है उसे बहाई समुदाय के विकास के उन तरीकों की श्रृंखला में सबसे नवीनतम समझना सर्वोत्तम होगा जिनमें से प्रत्येक, विशेष ऐतिहासिक परिस्थितियों के लिये अनुकूल था। विकास की यह दैवीय रूप से आगे बढ़ने वाली प्रक्रिया, एक सौ साठ वर्ष पूर्व 'प्रभुधर्म के पालने में उत्पन्न होने वाले उस जोश के माध्यम से गतिशील हुई जब हजारों ने एक 'नये दिवस' के आह्वान का प्रत्युत्तर दिया था, और पूरब के पड़ोसी देशों में तथा पश्चिम के विस्तृत क्षेत्रों में बहाउल्लाह का संदेश पहुँचाने के लिये शुरू के अनुयायियों द्वारा किये गये प्रयासों से इसने गतिशक्ति प्राप्त की। अब्दुल-बहा द्वारा प्रकट की गई दिव्य योजना की पातियों से इस प्रक्रिया ने और अधिक स्वरूप प्राप्त किया एवं उस दौरान जोर पकड़ा जब धर्मसंरक्षक के निर्देशन में बहाई गतिविधि के छोटे-छोटे केन्द्र स्थापित करने के लिये और प्रशासनिक व्यवस्था के प्रारम्भिक स्तम्भ खड़े करने के लिये, मित्रगण पूरे विश्व में सुनियोजित ढंग से फैल गये। इस प्रक्रिया ने दुनिया के ग्रामीण क्षेत्रों में तब गति पकड़ी जब लोगों ने समूहों में प्रभुधर्म को स्वीकार किया, लेकिन जब मित्रगण वृहत-स्तरीय विस्तार एवं सुगठन को कायम रखने की कार्यनीतियाँ ढूँढ़ने का प्रयत्न कर रहे थे उस दौरान यह प्रक्रिया काफी धीमी पड़ गयी। और अब पंद्रह साल से, जबसे हमने चार-वर्षीय योजना के आरम्भ में बहाई जगत का आह्वान किया था कि वह कई दशकों के दौरान प्राप्त किये गये कठिन किन्तु अनमोल ज्ञान से प्राप्त अनुभव के आधार पर शिक्षण

कार्य को प्रणालीबद्ध कर ले, तब से इसकी गति लगातार बढ़ रही है। कुछ ही लोग इस बात को समझने में असमर्थ होंगे कि विकास का वर्तमान तरीका, हालाँकि प्रभावशाली है, फिर भी एक बार क्लस्टर में जड़ जमा लेने के बाद इसे जटिलता और परिष्करण में और अधिक विकसित होना होगा तथा प्रभुधर्म में निहित "समाज-निर्माण की शक्ति" को अधिक से अधिक सुस्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना होगा।

13. वैश्विक बहाई समुदाय के विकास का उल्लेख करते हुए, प्रिय धर्मसंरक्षक ने कितनी बार मित्रों को प्रोत्साहित किया था कि वे अपने उद्देश्य में दृढ़ रहें और अपने प्रयासों में जुटे रहें। उन्होंने संतोष के साथ यह कहा था कि "अपने उच्च आह्वान के प्रति सचेत, अपने धर्म की समाज-निर्माण की शक्ति में विश्वास रखते हुए उन साधनों को तैयार एवं परिपूर्ण करने के अपने प्रयासों में -- जिनमें बहाउल्लाह की भ्रूणीय विश्व व्यवस्था परिपक्व और विकसित हो सके -- अडिग और अविचलित रहते हुए वे पूरी ताकत के साथ आगे बढ़ते हैं। उन्होंने मित्रों को याद दिलाया कि "यही वह -- धीमी और अदृष्ट -- निर्माण प्रक्रिया है," जो एक हताश मानवजाति की "एकमात्र उम्मीद" है। उनके लेखों से यह स्पष्ट है कि इस प्रक्रिया का विस्तार एवं प्रभाव बढ़ता जायेगा, और समय के साथ-साथ यह प्रशासनिक व्यवस्था, न केवल एक नई विश्व व्यवस्था का नाभिक बल्कि उसका यथार्थ ढाँचा समझे जाने की अपनी क्षमता प्रदर्शित करेगी। उन्होंने इतने बलपूर्वक ढंग से दावा किया है कि "एक ऐसी दुनिया में -- जिसकी "राजनीतिक और सामाजिक संस्थाओं का ढाँचा बिगड़ चुका है, जिसकी दृष्टि धुँधली हो गयी है, जिसकी चेतना बेसुध हो चुकी है, जिसकी धार्मिक व्यवस्थाएँ रक्तहीनता से पीड़ित हैं और अपनी नैतिकता गवाँ चुकी हैं" -- यह उपचारात्मक माध्यम, यह उत्प्रेरक बल, यह जोड़ने वाली अत्यन्त सजीव एवं सर्वव्यापी शक्ति "आकार प्राप्त" कर रही है, "संस्थाओं की शक्ल में निश्चित रूप धारण" कर रही है, और "अपनी शक्तियों को गतिमान" कर रही है।

14. जो बात स्पष्ट होनी चाहिये वह यह है कि, यदि इस प्रशासनिक व्यवस्था को भविष्य के समाज के ढाँचे के रूप में कार्य करना है, तो जिस समुदाय में यह विकसित हो रही है, उसे न केवल बढ़ती हुई जटिलता वाली भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने की क्षमता प्राप्त करनी चाहिये, बल्कि आकार में भी लगातार बढ़ते रहना चाहिये। अन्यथा यह कैसे सम्भव हो सकता है। एक छोटा-सा समुदाय, जिसके सदस्य अपनी साझी मान्यताओं के कारण एक हों, अपने उच्च आदर्शों के कारण विशिष्ट हों, अपने

गतिविधियों के प्रबन्धन एवं अपनी आवश्यकताओं की देखभाल करने में दक्ष हों, और शायद कई लोकोपकारी परियोजनाओं में भी संलग्न हों -- एक ऐसा समुदाय जो फल-फूल तो रहा हो लेकिन मानव समूहों द्वारा अनुभव की जाने वाली वास्तविकता से एक पर्याप्त दूरी पर हो, वह कभी भी पूरे समाज को पुनर्गठित करने वाले ढाँचे के रूप में काम करने की आशा नहीं कर सकता। हमारे लिये यह स्थायी आनन्द का स्रोत है कि विश्वव्यापी बहाई समुदाय आत्मसंतोष के खतरों से बचने में सफल रहा है। वास्तव में, अपना विस्तार और सुगठन अच्छी तरह से इस समुदाय के हाथों में है। फिर भी, दुनिया भर में गाँवों और शहरों की विशाल संख्याओं के गतिविधियों का प्रशासन करना -- बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था के ध्वज को इतना ऊँचा उठाना कि सभी देख सकें -- अब भी एक दूर का लक्ष्य है।

15. इसी में वह चुनौती निहित है जिसका सामना उन लोगों द्वारा किया जाना है जो सीखने की उस प्रक्रिया में सबसे आगे हैं, जो अगली योजना के दौरान आगे बढ़ती रहेगी। जहाँ कहीं भी एक सघन विकास कार्यक्रम स्थापित किया गया है, वहाँ सहभागिता का स्तर बढ़ाने में मित्रगण कोई कसर न छोड़ें। वे यह सुनिश्चित करने के लिए गहन परिश्रम करें कि जिस प्रणाली का उन्होंने इतने परिश्रम के साथ निर्माण किया है वह भीतर की ओर अभिमुख होकर न रह जाये, बल्कि अधिक से अधिक लोगों को समाविष्ट करने के लिये प्रगतिशील रूप से फैलती जाये। वे उस विलक्षण ग्रहणशीलता को अपनी आँखों से ओझल न होने दें जो उन्होंने तब पायी थी -- बल्कि, उत्सुक आशा की वह भावना जो उनकी उस समय प्रतीक्षा कर रही थी -- जब वे जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों के साथ परस्पर कार्य करने की तथा बहाउल्लाह के व्यक्तित्व एवं उनके प्रकटीकरण के बारे में उनसे वार्तालाप करने की अपनी क्षमता में विश्वास प्राप्त कर रहे थे। वे इस दृढ़ विश्वास को कस कर थाम लें कि जब गहराई के एक पर्याप्त स्तर पर प्रभुधर्म की एक सीधी प्रस्तुति दी जाती है और उसे सुगठन की एक ठोस पद्धति के द्वारा मजबूत किया जाता है तो स्थायी परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। वे यह न भूलें कि पूर्व में प्राप्त की गयी वह शिक्षा, जिससे इस बात में कोई संदेह नहीं रह जाता कि प्रभुधर्म के सक्रिय समर्थकों का एक तुलनात्मक रूप से छोटा-सा समूह, चाहे कितना ही संसाधनपूर्ण क्यों न हो, चाहे कितना ही समर्पित क्यों न हो, सैंकड़ों पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों वाले समुदायों की आवश्यकताओं को ही पूरा नहीं कर सकता, हजारों की आवश्यकताओं को तो बहुत ही कम। इसके अभिप्राय बिल्कुल स्पष्ट हैं। यदि किसी क्लस्टर में विस्तार और सुगठन की जिम्मेदारी उठाने वालों की संख्या दसियों में है और सामुदायिक जीवन की गतिविधियों में कुछ सैंकड़ों भाग ले रहे हैं, तो इन दोनों

आंकड़ों में उल्लेखनीय रूप से वृद्धि होनी चाहिये ताकि योजना के अन्त तक, सौ या दो सौ व्यक्ति, एक या दो हजार व्यक्तियों की सहभागिता में सहयोग दे रहे हों।

16. यह देख कर बहुत खुशी होती है कि पूरे विश्व के उन 1,600 क्लस्टरों में से -- जिनमें सघन विकास के कार्यक्रम चल रहे हैं -- कुछ 300 क्लस्टरों में अनुयायी सीखने के उस नये क्षेत्र में पहले ही प्रवेश कर चुके हैं जो अब उनके समक्ष खुल गया है, और, कुछ से अधिक क्लस्टरों में, वे इसकी सीमाओं का विस्तार भी कर रहे हैं। स्पष्ट रूप से, ऐसे सभी क्लस्टरों में प्रशिक्षण संस्थान द्वारा शुरू की गयी उन संयोजक प्रक्रियाओं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी आवश्यकताएँ हैं, को मजबूत करना सर्वाधिक महत्व रखता है -- अर्थात् समाज के सबसे कम उम्र के सदस्यों के लिये नियमित रूप से आयोजित कक्षाएँ, किशोरों के लिये सम्बद्धसमूह, और युवा एवं वयस्कों के लिये अध्ययन के वृत्त। इस कार्य के अधिकांश भाग के लिये जो आवश्यक है उसकी चर्चा रिज़वान संदेश में की जा चुकी है। बगैर किसी अपवाद के, संस्थान प्रक्रिया के रूपांतरणकारी प्रभावों को प्रत्यक्ष तौर पर देख लेने के बाद, ऐसे क्लस्टरों में मित्रगण इस प्रक्रिया के मूल में निहित गत्यात्मकता की पूर्ण समझ प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं -- भाईचारे की जो भावना यह उत्पन्न करती है, सहभागिता की जो पद्धति यह अपनाती है, समझ की जिस गहराई को यह बढ़ावा देती है, सेवा के जिन कार्यों का यह सुझाव देती है, और इन सबसे ऊपर, 'ईश्वर के शब्द' पर इसका जो भरोसा है। यह सुनिश्चित करने का हर सम्भव प्रयास किया जा रहा है कि यह प्रक्रिया "होने" और "कहने" के बीच उस पूरकता को प्रतिबिम्बित करे, जिसे संस्थान के पाठ्यक्रम प्रकट करते हैं; ज्ञान और उसके व्यवहारिक उपयोग को जो प्रमुखता ये प्रदान करते हैं; मिथ्या विरोधाभासों से बचने पर जो बल ये देते हैं; 'सृजनात्मक शब्द' को कण्ठस्थ करने पर जो जोर ये देते हैं; तथा ज़िद्दी अहम् को जगाए बगैर चैतन्य को बढ़ाने पर जो ध्यान ये देते हैं।

प्रशासनिक क्षमता बढ़ाना

17. यद्यपि सीखने में आगे रहने वाले क्लस्टरों में विकास की प्रक्रिया के केन्द्रीय तत्व अपरिवर्तित रहते हैं, फिर भी बड़ी संख्याएँ ही, संगठनात्मक व्यवस्थाओं को जटिलता के उच्चतर को प्राप्त करना आवश्यक बना देती है। भौगोलिक कारणों और संख्यात्मक विकास के आधार पर पहले ही भिन्न-भिन्न नवरीतियाँ लागू की जा चुकी हैं। छोटी-छोटी

इकाईयों में क्लस्टर का विभाजन, समीक्षा बैठकों का विकेन्द्रिकरण, संस्थान संयोजकों को सहायकों का आवंटन, क्षेत्र में, दूसरों को समर्थन देने के लिये अनुभवी मित्रों के समूहों की तैनाती -- ये उन व्यवस्थाओं में से कुछ हैं जो अब तक की गयी हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपके सक्षम सहयोग से, अगली योजना के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र इस प्रगति को ज़ारी रखेगा, तथा अभी तक की सीख को भलीभांति अनुभूत विधियों तथा साधनों के रूप में संगठित करने में सहायता करेगा। इस उद्देश्य के लिये, आप और आपके सहायक मण्डल सदस्यों को एक ऐसा वातावरण तैयार करने की आवश्यकता होगी जो मित्रों को प्रोत्साहित करे कि वे प्रणालीबद्ध हों किन्तु कठोर नहीं, सृजनात्मक हों किन्तु अव्यवस्थित नहीं, निर्णायक हों किन्तु जल्दबाज नहीं, सावधान हों किन्तु नियन्त्रण करने वाले नहीं, और इस बात को स्वीकार करें कि अन्त में तकनीक नहीं, बल्कि विचारों की एकता, सतत् क्रिया, एवं सीखने के प्रति समर्पण ही प्रगति लाएँगे।

18. बृहत्-स्तरीय गतिविधि का समन्वय करने के लिये क्लस्टर स्तर पर की गयी व्यवस्थाओं का स्वरूप कुछ भी हो, लेकिन सतत् प्रगति तो स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास पर तथा क्षेत्रीय बहाई परिषदों एवं अन्ततः राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की बढ़ी हुई क्षमता पर निर्भर करेगी। राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं की बढ़ती हुई शक्ति देखकर रिज़वान संदेश में हमने प्रसन्नता व्यक्त की थी और आगामी पाँच वर्षों को हम आशापूर्ण दृष्टि से देखते हैं कि निश्चय ही इस सम्बन्ध में हम उल्लेखनीय प्रगति की छलांगें देखेंगे। साथ ही, हमें कोई संदेह नहीं कि आप, राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं के साथ सामंजस्य में क्षेत्रीय परिषदों को उनकी संस्थागत क्षमता बढ़ाने में सहायता दे सकेंगे। वर्तमान में पूरे विश्व में 45 देशों में 170 ऐसी प्रशासनिक संस्थाएँ हैं, और अगली योजना के दौरान इनकी संख्या का बढ़ना निश्चित है। यह अत्यावश्यक होगा कि सभी क्षेत्रीय परिषदें, प्रशिक्षण संस्थान के संचालन और क्षेत्रीय शिक्षण समितियों की कार्य-पद्धति पर बारीकी से ध्यान दें। इस बात को ध्यान में रखते हुए, वे ऐसी व्यवस्थाएँ उत्पन्न और परिष्कृत करना आवश्यक पाएँगे जो क्लस्टर स्तर पर खुलने वाले विकास के प्रतिमान को, और उससे जुड़ी सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सहायता करें। इनमें एक ऐसा सुचारू रूप से संचालित क्षेत्रीय कार्यालय शामिल होगा, जो सचिव को आधारभूत संगठनात्मक सहायता प्रदान करता हो; लेखा कार्य की एक समूची प्रणाली शामिल होगी जो क्लस्टर की ओर तथा क्लस्टर से वित्तीय सहायता के प्रवाह के विविध चैनलों को स्थान देती हो;

संचार का एक कार्यदक्ष साधन शामिल होगा जो गाँवों और मोहल्लों में जीवन की वास्तविकता को ध्यान में रखता हो; और जहाँ आवश्यक हो, वहाँ ऐसे भौतिक ढाँचे शामिल होंगे जो प्रबल एवं संकेन्द्रित गतिविधि की सुविधा प्रदान करते हों। इस सम्बन्ध में जो बात जानना महत्वपूर्ण है वह यह है कि केवल यदि परिषदें स्वयं एक सीखने की प्रक्रिया में संलग्न होंगी, तो ही ऐसी व्यवस्थाएँ प्रभावशाली सिद्ध होंगी। अन्यथा, विकसित की जा रहीं व्यवस्थाओं को हालाँकि प्रकट रूप से, मोहल्लों और गाँवों में प्रतिभागिता की एक बढ़ती हुई संख्या को कार्य के दौरान सीखने में समर्थन देने के लिये उत्पन्न किया गया है, वे सूक्ष्म तरीकों से बिल्कुल इसके विरोध में काम कर सकती हैं और अनजाने में स्थानीय स्तर पर बढ़ती हुई आकांक्षाओं का दम घोंट सकती हैं।

19. जहाँ राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभाओं एवं क्षेत्रीय परिषदों के साथ सहयोग करना आपके प्राथमिक प्रयोजनों में से एक होगा, वहीं आपके सहायक मण्डल सदस्यों के लिये आवश्यक होगा कि वे अपनी अधिकाधिक ऊर्जाएँ स्थानीय स्तर पर संस्थागत क्षमता को बढ़ावा देने में लगाएँ, जहाँ सामुदायिक निर्माण की माँगे स्वयं पर इतने स्पष्ट रूप से बल देती हैं। इस बात की परिकल्पना करने में आपकी सहायता करने के लिये, कि सभी जगह, विशेषकर बृहत्-स्तरीय विस्तार एवं सुगठन अनुभव करने वाले क्लस्टरों में, सहायक मण्डल सदस्यों और उनकी सहायकों के लिये आगे जो आ रहा है, हम पहले आपसे विश्व के उन अनेक ग्रामीण क्षेत्रों की स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के विकास पर विचार करने को कहेंगे जिनमें ऐसे अधिकांश क्लस्टर पाये जाते हैं।

20. जैसा कि आप जानते हैं, कई गाँवों और शायद एक या दो कस्बों से बने एक ग्रामीण क्लस्टर में जिस दौरान एक सघन विकास कार्यक्रम से जुड़े कार्य का स्वरूप स्थापित हो रहा होता है, प्रायः उस दौरान मित्रों के प्रयास कुछ क्षेत्रों तक सिमटे रहते हैं। लेकिन एक बार यह प्रतिमान स्थापित हो जाता है तो इसे एक के बाद एक गाँव में तेजी से फैलाया जा सकता है, जैसा कि इस वर्ष के हमारे रिज़वान संदेश में बताया गया था। प्रारम्भ में, प्रत्येक क्षेत्र में स्थानीय आध्यात्मिक सभा अस्तित्व में आती है, और उसका स्थायी विकास एक ऐसे पथ पर आगे बढ़ता है जो गाँव में खुल रही विकास की नवजात प्रक्रिया के समानांतर होता है और उसके साथ घनिष्ठता से बँधा हुआ होता है। और इस प्रक्रिया के अन्य पहलुओं के समान ही, स्थानीय आध्यात्मिक सभा के विकास को भी क्षमता-निर्माण के संदर्भ में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

21. प्रारम्भ में जो घटित होना चाहिये वह तुलनात्मक रूप से सीधा-सीधा है: गाँव में जोर पकड़ने वाली विकास की प्रक्रिया के बारे में उस व्यक्तिगत जागरूकता को, जो मूल गतिविधियों में प्रत्येक सदस्य की व्यक्तिगत भागीदारी से उत्पन्न होती है, एक ऐसे सामूहिक बोध में संलीन हो जाना चाहिये जो हो रहे परिवर्तन के स्वरूप को समझने के साथ-साथ उसे बढ़ावा देने के स्थानीय सभा के कर्तव्य को भी समझता हो। निःसंदेह, थोड़ा-बहुत ध्यान आधारभूत प्रशासनिक कार्यों पर देना होगा -- उदाहरण के लिये, कुछ सीमा तक नियमित रूप से मिलना, उन्नीस दिवसीय सहभोज का आयोजन करना एवं पावन दिवसों को मनाने के लिये योजना बनाना, एक स्थानीय कोष स्थापित करना, और बहाई सिद्धान्त के अनुसार वार्षिक चुनाव कराना। लेकिन, ऐसे प्रयासों के साथ जुड़ी हुई तथा एक सहायक मण्डल सदस्य के सहायक से प्राप्त प्रोत्साहन से, स्थानीय सभा के लिये समुदाय के जीवन के साथ तत्काल रूप से जुड़े एक या दो ऐसे विशेष विषयों पर एक संस्था के रूप में परामर्श करना कठिन नहीं होना चाहिये: जैसे प्रथम संस्थान-पाठ्यक्रम का अध्ययन पूरा कर लेने वाले व्यक्तियों के प्रयासों के माध्यम से गाँव का भक्तिपरक स्वरूप किस तरह बढ़ाया जा रहा है; संस्थान-पाठ्यक्रम के द्वारा तैयार किये गए शिक्षकों द्वारा किस प्रकार बच्चों को नैतिक शिक्षा दी जा रही है; किशोरों के लिये आध्यात्मिक सशक्तिकरण कार्यक्रम के द्वारा उनकी क्षमता का उपयोग किस प्रकार किया जा रहा है; मित्रों द्वारा एक-दूसरे के घर पर मिलने जाने से समुदाय का आध्यात्मिक और सामाजिक ढाँचा किस प्रकार सुदृढ़ हो रहा है। जब स्थानीय सभा ऐसे वास्तविक विषयों पर परामर्श करती है और विकास की प्रक्रिया को प्रेम एवं धैर्य के साथ पोषित करती है, तो क्षेत्रीय शिक्षण समिति और प्रशिक्षण संस्थान के साथ उसके सम्बन्ध धीरे-धीरे एक साझे उद्देश्य में जुड़ जाते हैं। लेकिन, इससे भी अधिक महत्वपूर्ण यह है कि यह उस आधार की स्थापना करना आरम्भ करेगी जिस पर वह अद्वितीय रूप से स्नेहमय एवं वास्तव में सहायक सम्बन्ध निर्मित किया जा सकता है, जो स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं को व्यक्तिगत अनुयायी के साथ स्थापित करना चाहिये -- और जिसका वर्णन, धर्मसंरक्षक द्वारा उनके कई संदेशों में किया गया था।

22. स्पष्ट रूप से, वैश्विक योजना से जुड़े उन विशेष मुद्दों पर परामर्श करना सीखना, जो कितने ही निर्णायक क्यों न हों, क्षमता-निर्माण की उस प्रक्रिया के केवल एक आयाम को दर्शाता है जिसमें स्थानीय आध्यात्मिक सभा को संलग्न होना चाहिये। इसके सतत्

विकास का अर्थ है अब्दुल-बहा के इस आदेश का पालन कि “परिचर्चाओं को ऐसे आध्यात्मिक मामलों तक सीमित रहना चाहिये जो आत्माओं के प्रशिक्षण, बच्चों की शिक्षा, गरीबों के लिये राहत, विश्व भर में सभी वर्ग के कमजोर लोगों की सहायता, सभी लोगों के प्रति दयालुता, ईश्वर की सुगंध के फैलाव, और ‘उनके पावन शब्द’ के उन्नयन से सम्बन्धित हों।” इसकी स्थायी प्रगति के लिये, समुदाय के सर्वोत्तम हितों को बढ़ावा देने के प्रति अनमय प्रतिबद्धता की आवश्यकता है तथा विकास की प्रक्रिया को नैतिक पतन की उन शक्तियों से सुरक्षित रखने में सतर्कता की आवश्यकता है जो उसे रोकने का खतरा पैदा करती है। इसकी अनवरत प्रगति के लिये उत्तरदायित्व के एक बोध की आवश्यकता है जो उन मित्रों और परिवारों के दायरे से परे जाता हो, जो मूल गतिविधियों में संलग्न हैं, तथा पूरे गाँव के लोगों को सम्मिलित करता हो। और अब्दुल-बहा के इस आश्वासन में अविचल विश्वास इसकी उत्तरोत्तर परिपक्वता को बनाये रखता है, कि वे प्रत्येक आध्यात्मिक सभा को अपनी देखभाल एवं सुरक्षा के आलिंगन में आच्छादित कर लेंगे।

23. सामूहिक बोध में वृद्धि के साथ जुड़ी है, समुदाय की गतिविधियों और अपने प्रशासकीय कार्यों को निष्पादित करने, जिनमें समय के साथ समितियों की विवेकपूर्ण नियुक्ति व अपने कार्यों को निष्पादित करने के लिये साधारण भौतिक सुविधाओं की देख-रेख भी शामिल हो सकती है, के लिये सहायता देने हेतु, स्थानीय सभा की वित्तीय एवं अन्य संसाधनों का ठीक से आंकलन एवं उपयोग करने की क्षमता। स्थानीय सभा द्वारा इन संसाधनों दोनों के आंकलन व उपयोग की योग्यता में वृद्धि। एकीकृत कार्य में, बड़ी संख्याओं में मित्रों की सहभागिता में सहायता करने वाला वातावरण निर्मित करने की, और यह सुनिश्चित करना कि उनकी ऊर्जाएँ और प्रतिभाएँ प्रगति में योगदान दें, उसकी यह क्षमता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इन सभी संदर्भों में सभा के मन में सबसे ऊपर समुदाय का आध्यात्मिक कल्याण रहता है। और जब ऐसी समस्याएँ उत्पन्न हों जो टल नहीं सकतीं, चाहे वे किसी भी गतिविधि के सम्बन्ध में हों या व्यक्तियों के बीच, तो इनका समाधान एक स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा किया जायेगा जिसने समुदाय के सदस्यों का विश्वास इतने पूर्णरूप से प्राप्त कर लिया है कि सभी, सहायता के लिये स्वाभाविक रूप से इसकी ओर मुड़ते हैं। इसका अर्थ यह है कि स्थानीय सभा ने अनुभव से सीख लिया है कि एक पक्षधर मानसिकता के विभाजनात्मक तरीकों से दूर रहने में अनुयायियों की सहायता कैसे की जाये, अत्यन्त हैरान कर देने वाली और कांटेदार

परिस्थितियों में भी एकता के बीज कैसे ढूँढ़ निकाले जाएँ और न्याय के मानदण्ड को बनाये रखते हुए, उन्हें धीरे-धीरे एवं प्रेम से किस तरह पोषित किया जाये।

24. पूर्व में हमने संकेत दिया है कि जैसे-जैसे समुदाय का आकार, तथा जीवन-शक्ति बनाए रखने की क्षमता बढ़ेगी, वैसे-वैसे मित्रगण समाज के जीवन में जुड़ते जाएँगे और उन पद्धतियों का लाभ उठाने की चुनौती का सामना करेंगे जो उन्होंने उन विविध समस्याओं का समाधान करने के लिये विकसित की हैं जिनका सामना उनके गाँव द्वारा किया जा रहा है। सामंजस्य का वह प्रश्न, जो अब तक प्राप्त किये गये विकास के लिये इतना महत्वपूर्ण है, और जो योजन के कार्य के विकासशील ढाँचे के लिये इतना आधारभूत है, अब नये आयाम अपनाता है। जब मित्रगण कार्य, समीक्षा और परामर्श की एक प्रक्रिया के माध्यम से स्थितियों को सुधारने के लिये प्रभुधर्म की शिक्षाओं को अमल में लाने का प्रयास करें, तो यह सुनिश्चित करने के लिये कि उनके प्रयासों का सत्यनिष्ठा के साथ समझौता न हो, बहुत कुछ दायित्व स्थानीय सभा पर आयेगा, परियोजनाओं के निष्पादक के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक अधिकार की आवाज के रूप में।

25. हमारे रिजवान संदेश में, स्थानीय स्तर पर सामाजिक क्रिया की कुछ विशेषताओं तथा उसके लिये आवश्यक शर्तों का वर्णन किया गया था। एक गाँव में आमतौर पर छोटे पैमाने पर प्रयास शुरू होंगे, सम्भवतः मित्रों के ऐसे समूहों के उभरने के साथ, जिनमें से प्रत्येक समूह किसी ऐसी विशेष सामाजिक या आर्थिक आवश्यकता से जुड़ा होगा जिसकी उसने पहचान की हो, तथा प्रत्येक, एक सरल वर्ग की उपयुक्त क्रियाओं में संलग्न होगा। उन्नीस दिवसीय सहभोज में होने वाला परामर्श, समुदाय की बढ़ती हुई सामाजिक चेतना की सकारात्मक अभिव्यक्ति के लिये एक अवसर उत्पन्न करता है। निष्पादित की गयी गतिविधियों का स्वरूप कुछ भी हो, लेकिन स्थानीय सभा को सम्भावित खतरों के प्रति चौकस रहना चाहिये और यदि आवश्यक हो, तो उनसे निपटने में मित्रों की सहायता करनी चाहिये: जैसे कि उन अति-महत्वाकांक्षी परियोजनाओं के प्रलोभन से, जो ऊर्जाएँ बर्बाद करें और अन्ततः असमर्थनीय सिद्ध हों, उन वित्तीय सहायताओं के लालच से, जो बहाई सिद्धान्त से हटना आवश्यक बना दें, भ्रामक रूप से प्रस्तुत की गयी उन तकनीकों के वादों से, जो गाँव को उसकी सांस्कृतिक धरोहर से वंचित कर दें और विखण्डन एवं मतभेद पैदा करें। अन्ततः गाँव में संस्थान प्रक्रिया का बल और उसके द्वारा व्यक्तियों में प्रोत्साहित की गयी बढ़ी हुई योग्यताएँ, मित्रों को उन

पद्धतियों और कार्यक्रमों का लाभ उठाने में समर्थ बना सकती जिनकी प्रभावशीलता सिद्ध हो चुकी है, जो किसी न किसी बहाई प्रेरित संस्था द्वारा विकसित की गयी हैं, और जिन्हें हमारे सामाजिक एवं आर्थिक विकास कार्यालय के सुझाव पर, और उनके समर्थन से क्लस्टर में लागू किया गया है। इसके अतिरिक्त, स्थानीय सभा को उस स्थान की सामाजिक एवं राजनीतिक ढाँचों के साथ परस्पर क्रिया करना सीखना चाहिये और इस तरह धीरे-धीरे प्रभुधर्म की उपस्थिति के बारे में और गाँव की प्रगति पर उसके द्वारा डाले गये प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ानी चाहिये।

26. पूर्वगामी अनुच्छेदों में जो उल्लेखित किया गया है वह उन गुणों में से केवल कुछ को ही दर्शाता है जिन्हें दुनिया के अनेक गाँवों की स्थानीय आध्यात्मिक सभाएँ ऐसे समुदायों की आवश्यकताओं को पूरा करने के दौरान धीरे-धीरे विकसित करेंगी जो अधिक से अधिक संख्याओं को समाविष्ट करेंगे। जैसे-जैसे वे अपनी अन्तर्निहित क्षमताओं और शक्तियों को अधिकाधिक प्रकट करेंगी, वैसे-वैसे प्रत्येक गाँव के निवासियों द्वारा उनके सदस्यों को “मनुष्यों के बीच उस ‘दयालु’ (ईश्वर) के विश्वसनीय जनों” के रूप में देखा जाने लगेगा। इस तरह, ये सभाएँ ऐसे “प्रकाशमान दीपक और स्वर्गिक उपवन” बन जाएँगी, “जिनसे सभी क्षेत्रों में पावनता की सुगंध फैलती है, और चारों ओर सभी सृजित वस्तुओं पर ज्ञान का प्रकाश फैलता है। इनसे, सभी दिशाओं में जीवन की चेतना प्रवाहित होती है।”

27. निःसंदेह, ऐसा उदात्त दृश्य दुनिया भर में सभी स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं पर लागू होता है। यहाँ तक कि एक बड़े महानगरीय क्षेत्र में भी एक स्थानीय सभा के विकास का स्वरूप आधारभूत रूप से वैसा ही होता है जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है। इनकी भिन्नताएँ, मुख्य रूप से आकार और जन-समुदाय की विविधता में निहित है। पहली भिन्नता यह आवश्यक बना देती है कि सभा के अधिकार क्षेत्र को मोहल्लों में विभाजित कर दिया जाये और ऐसा विभाजन प्रत्येक मोहल्ले में विकास की जरुरतों के अनुसार, तथा इनमें प्रभुधर्म के गतिविधियों के प्रबंध से जुड़ी व्यवस्थाओं को क्रमिक रूप से स्थापित करने की जरुरतों के अनुसार किया जाये। दूसरी भिन्नता के लिये यह आवश्यक है कि स्थानीय सभा, भौगोलिक स्थानों से परे उन असंख्य सामाजिक मंचों से परिचित हो जाये जिनमें जन समुदायों के कुछ वर्ग इकट्ठा होते हैं, एवं जहाँ तक सम्भव हो उन्हें वह विवेक प्रदान करें जो प्रभुधर्म की शिक्षाओं में निहित है। इसके अतिरिक्त, एक शहरी क्षेत्र के वे संस्थागत ढाँचे -- सामाजिक, राजनीतिक, एवं सांस्कृतिक -- जिनके साथ सभा

को जुड़ना सीखना होगा, विविधता में कहीं अधिक विस्तृत एवं संख्या में कहीं अधिक प्रचुर हैं।

बहाई संस्थाओं पर सेवा

28. अगली पाँच वर्षीय योजना के दौरान प्रभुधर्म के प्रशासनिक कार्य में जो विकास देखने को हम उत्सुक हैं, उसका इन पृष्ठों में वर्णन करते हुए हमें धर्मसंरक्षक द्वारा इस सम्बन्ध में बार-बार दी गयी चेतावनियाँ याद आती हैं। उन्होंने कहा था, कि "आईये हम ध्यान रखें कि प्रभुधर्म के प्रशासनिक यंत्र को पूर्ण बनाने की हमारी गंभीर चिंता में, कहीं हम उस 'दिव्य उद्देश्य' को आँखों से ओझल न हो जाने दें जिसके लिये इसे बनाया गया है।" उन्होंने बार-बार दोहराया, कि "बहाई प्रशासनिक यंत्र को एक माध्यम समझा जाना चाहिये, न कि अपने आप में एक ध्येय।" उन्होंने स्पष्ट किया कि इसका उद्देश्य "एक दोहरे उद्देश्य को पूरा करना" है। एक ओर, "एक ऐसी रूप-रेखा के अनुसार प्रभुधर्म का स्थायी एवं क्रमिक विस्तार इसका लक्ष्य होना चाहिये, जो विस्तृत, समर्थ एवं सार्वभौमिक है।" दूसरी ओर, "इसे उस कार्य का आंतरिक दृढ़ीकरण सुनिश्चित करना चाहिये जो पूरा किया जा चुका है।" और आगे उन्होंने समझाया कि "इसे वह प्रेरणा प्रदान करनी चाहिये जिससे प्रभुधर्म में निहित गत्यात्मक शक्तियाँ प्रकट हो सकें, एक निश्चित रूप धारण कर सकें और मनुष्यों के जीवन और आचरण को गढ़ सकें, साथ ही इसे, बहाई समुदाय को बनाने वाले विविध तत्वों के बीच विचारों के आदान-प्रदान एवं गतिविधियों के समन्वय के लिये एक माध्यम का काम करना चाहिये।"

29. हमारी यह हार्दिक आशा है कि, अगली योजना के दौरान, स्थानीय से राष्ट्रीय तक सभी स्तरों पर बहाई प्रशासन के ठोस एवं सामंजस्यपूर्ण विश्वास को बढ़ावा देने के अपने प्रयासों में आप मित्रों की सहायता करने के भरपूर प्रयास करेंगे ताकि वे अपने कार्यों को विकास की उस जैविक प्रक्रिया के संदर्भ में निष्पादित करें जो दुनिया भर में जोर पकड़ रही है। इस आशा का पूरा होना, काफी हद तक इस पर निर्भर करता है कि ऐसी सेवा अर्पित करने के लिये जिन लोगों का आह्वान किया गया है -- चाहे वे किसी आध्यात्मिक सभा पर चुने गये हों, या उसकी किसी एजेंसी पर नियुक्त हों, या एक संस्थान संयोजक नामित किये गये हों, या आपके एक नियुक्त सहायक हों -- अपने महान सौभाग्य को समझें और उन सीमाओं को समझें जो यह सौभाग्य उनके लिये स्थापित करता है।

30. प्रभुधर्म की संस्थाओं एवं एजेंसियों पर सेवा देना वास्तव में एक अतिबृहत् सौभाग्य है लेकिन वैसा नहीं जिसे प्राप्त करने की व्यक्ति द्वारा कोशिश की जाती है; यह एक ऐसा कर्तव्य और जिम्मेदारी है जिसे निभाने के लिये किसी भी समय उसका आह्वान किया जा सकता है। यह बात अवश्य ही समझ में आती है कि वे सभी लोग जो बहाई प्रशासन में संलग्न हैं, स्वाभाविक रूप से अनुभव करेंगे कि किसी भी रूप में, उन्हें एक ऐसे ढाँचे का हिस्सा बनने का विलक्षण सम्मान मिला है, जिसे वह माध्यम बनाया गया है जिसके द्वारा प्रभुधर्म की चेतना प्रवाहित होती है। फिर भी, उन्हें यह नहीं मान लेना चाहिये कि ऐसी सेवा उन्हें उस सीखने की प्रक्रिया की बाहरी सतह पर कार्य करने का अधिकार प्रदान करती है जो सभी जगह जोर पकड़ रही है, और वे इस प्रकार सेवा की स्वाभाविक आवश्यकताओं से मुक्त हैं। न ही यह मान लिया जाना चाहिये कि प्रशासनिक संस्थाओं की सदस्यता व्यक्ति को यह अवसर प्रदान करती है कि वह 'पावन ग्रंथ' में अभिलिखित बातों के बारे में तथा शिक्षाओं को लागू करने के तरीके के बारे में अपनी स्वयं की समझ का प्रचार करते हुए, समुदाय को हर उस दिशा में ले जाए, जो उसकी व्यक्तिगत पसंद द्वारा निर्धारित की गयी हो। आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के संदर्भ में धर्मसंरक्षक ने लिखा है कि "उन्हें अपनी पसंद और नापसंद पर, अपने व्यक्तिगत हितों और प्रवृत्तियों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देना चाहिये और अपने मस्तिष्कों को उन उपायों पर केन्द्रित करना चाहिये जो बहाई समुदाय के कल्याण एवं सुख में सहायक हों और जो सर्वहित को बढ़ावा दें।" बहाई संस्थाएँ, मित्रों का मार्गदर्शन करने का, तथा व्यक्तियों और समुदायों पर नैतिक, आध्यात्मिक एवं बौद्धिक प्रभाव डालने का अधिकार अवश्य रखती हैं। फिर भी, ऐसे कार्यों को इस समझ के साथ निष्पादित किया जाना चाहिये कि बहाई संस्थानिक पहचान में, प्रेममय सेवा की मूलभूत भावना व्याप्त होती है। अधिकार एवं प्रभाव को इस प्रकार योग्य बनाने का अर्थ है उन लोगों की ओर से त्याग किया जाना जिन्हें प्रभुधर्म के गतिविधियों का प्रबंध सौंपा गया है। क्या अब्दुल-बहा हमें नहीं कहते कि "जब लोहे के एक ढेले को भट्टी में डाला जाता है, तो उसके लौह-सम्बन्धी गुण, जैसे कि कालापन, ठण्डक, ठोसपन, जो कि मानव जगत की विशेषताओं के प्रतीक हैं, छिप जाते हैं और गायब हो जाते हैं, जबकि आग के विशेष गुण, जैसे लाली, उष्मा और तरलता, जो कि दिव्य साम्राज्य के गुणों के प्रतीक हैं, उसमें स्पष्ट रूप से दिखायी देने लगते हैं।" जैसा कि उन्होंने दृढ़ता से कहा था, "इस मामले में -- अर्थात् मानवजाति की

सेवा में -- तुम्हें अपने प्राण भी न्यौछावर कर देने चाहिये, और जब तुम स्वयं को अर्पित करो, तो आनंद मनाओ।”

* **

31. परम प्रिय मित्रों: जैसा कि आप अच्छी तरह से जानते हैं, हमें यह देख कर बहुत खुशी हो रही है कि शिक्षण के क्षेत्र में सबसे आगे सेवा देने वाले आप और आपके सहायक, प्रत्येक हृदय एवं आत्मा में ईश्वर के प्रेम की अग्नि को पोषित करने के, ज्ञान को बढ़ावा देने के, तथा एक नेक एवं प्रशंसनीय चरित्र विकसित करने के प्रयासों में सभी की सहायता करने के अपने कर्तव्यों को कितनी कुशलतापूर्वक निष्पादित कर रहे हैं। जब उत्तर अमरीका के बहाई समुदाय ने, दिव्य योजना की पातियों में उन्हें सौंपी गयी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिये अपनी प्रथम सात-वर्षीय योजना की शुरुआत की, तो धर्मसंरक्षक ने उस देश के मित्रों को दिनांक 25 दिसम्बर 1938, को एक काफी लम्बा और महान सामर्थ्य वाला पत्र सम्बोधित किया जिसे बाद में द एडवेन्ट ऑफ डिवाइन जस्टिस के नाम से प्रकाशित किया गया। प्रस्तावित कार्य के स्वरूप का वर्णन करते हुए, इस पत्र ने उन बातों का उल्लेख किया जिनका वर्णन धर्मसंरक्षक ने सभी बहाई कार्यों की सफलता की आवश्यक शर्तों के रूप में किया था। उन्होंने संकेत दिया कि इनमें से तीन, “सर्वश्रेष्ठ एवं अत्यावश्यक, अलग दिखायी देती हैं”: आचरण की शुद्धता, एक पवित्र एवं पावन जीवन, और पूर्वाग्रह से मुक्ति। आज दुनिया के हालात को देखते हुए, एक के बाद एक क्लस्टर को बहाउल्लाह के प्रकटीकरण की चेतना से भर देने के बहाई समुदाय के वैश्विक प्रयास के लिये, धर्मसंरक्षक के इन कथनों के अभिप्राय पर विचार करना आपके लिये लाभप्रद होगा।

32. आचरण की शुद्धता की चर्चा करते हुए शोग़ी एफ़ेन्दी ने उस “न्याय, साम्यता, सत्यवादिता, ईमानदारी, निष्पक्ष-प्रवृत्ति, विश्वसनीयता, और विश्वासपात्रता” की बात की थी जिनसे बहाई समुदाय के जीवन का प्रत्येक पहलू पहचाना जाना चाहिये।” यद्यपि यह इस समुदाय के सभी सदस्यों पर लागू होता है, फिर भी, उन्होंने बल दिया कि यह आवश्यकता मुख्य रूप से इसके “निर्वाचित प्रतिनिधियों” की ओर दिष्ट की गयी है, “चाहे वे स्थानीय हों, क्षेत्रीय हों, या राष्ट्रीय हों,” जिनका नैतिक सच्चाई का बोध, उन “भ्रष्ट करने वाले प्रभावों” के बिल्कुल विपरीत होना चाहिये, “जिन्हें एक भ्रष्टाचार से भरा

राजनीतिक जीवन इतने ध्यान-आकर्षित करने वाले ढंग से प्रकट करता है।" धर्मसंरक्षक ने एक "अजीब ढंग से अस्त-व्यस्त दुनिया" में "अविचल न्याय के एक स्थायी बोध" का आह्वान किया है और बड़े पैमाने पर बहाउल्लाह और अब्दुल-बहा के लेखों से उद्धृत करते हुए मित्रों की दृष्टि को ईमानदार एवं विश्वासपात्रता के उच्चतम मानदण्डों पर टिका दिया है। उन्होंने अनुयायियों से आग्रह किया, कि वे अपने जीवन के हर पहलू में -- अपने व्यावसायिक लेन-देन में, अपने घरेलू जीवन में, सभी प्रकार के कार्यों में, प्रभुधर्म के लिए तथा अपने सह-मानवों को दी गयी प्रत्येक सेवा में -- आचरण की शुद्धता का परिचय दें तथा प्रभुधर्म के नियमों एवं सिद्धान्तों के, कभी समझौता न करने वाले अनुपालन में, इसकी आवश्यकताओं का पालन करें। यह स्पष्ट है कि मध्यवर्ती वर्षों में सभी जगह राजनीतिक जीवन एक खतरनाक गति से बिगड़ता गया है, क्योंकि शासनकला की अवधारणा को ही अर्थ-रहित कर दिया गया है, क्योंकि प्रगति के नाम पर नीतियाँ चन्द लोगों के आर्थिक हितों को पूरा कर रही हैं, क्योंकि पाखण्ड को, सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचों के गतिविधियों को खोखला कर देने की अनुमति दे दी गयी है। सचमुच, यदि प्रभुधर्म के ऊँचे मानदण्डों को बनाए रखने के लिये मित्रों की ओर से इतने अधिक प्रयास की आवश्यकता है, तो एक ऐसी दुनिया में कितने अधिक प्रयास करने की आवश्यकता होगी जो बेईमानी को पुरस्कृत करती है, जो भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन देती है, और जो सत्य को एक मोलभाव की वस्तु समझती है। समाज की नींव को खतरे में डालने वाली अस्तव्यस्तता गंभीर है, और बहाई गतिविधि में संलग्न सभी लोगों का निश्चय अटल होना चाहिये, कहीं ऐसा न हो कि आत्म-हित का हल्का सा भी लक्षण उनके विवेक को धुँधला कर दे। प्रत्येक प्रशिक्षण संस्थान के संयोजक, प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षण समिति के सदस्य, प्रत्येक सहायक मण्डल सदस्य और उसका हर सहायक, एवं प्रत्येक निर्वाचित या नियुक्त स्थानीय, क्षेत्रीय एवं राष्ट्रीय बहाई संस्था के सभी सदस्य, अपने हृदय में उस नैतिक शुद्धता के अभिप्राय पर विचार करने के धर्मसंरक्षक के आग्रह के महत्व को समझें, जिसका वर्णन उन्होंने इतनी स्पष्टता के साथ किया था। उनके कर्म, एक परेशान और थकीहारी मानवजाति को उसकी उच्च नियति और उसकी अन्तर्जात श्रेष्ठता की याद दिलाने में सहायक हों।

33. आज इस कठिन, बहाई उद्यम की सफलता के लिये उस पवित्र और पावन जीवन के महत्व पर धर्मसंरक्षक की स्पष्ट और सीधी टिप्पणियाँ उतनी ही उपयुक्त हैं, "जिसका अभिप्राय है विनम्रता, पवित्रता, संयम, शालीनता और स्वच्छ-विचारवादिता।" वे अपनी भाषा में स्पष्ट थे, जो मित्रों से एक ऐसे जीवन की माँग कर रहे थे, जो बेदाग हो, उन "अभद्रताओं, बुराइयों, झूठे मानदण्डों से, जिन्हें एक स्वाभाविक रूप से त्रुटिपूर्ण नैतिक संहिता, सहन करती है, बनाये रखती है और बढ़ावा देती है।" यहाँ हमें आपके लिये उस प्रभाव का प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है जो एक ऐसी त्रुटिपूर्ण संहिता अब सम्पूर्ण मानवजाति पर डाल रही है; धरती के दूरस्थ स्थल भी इसके प्रलोभनों से मोहित हो गये हैं। फिर भी हम बाध्य महसूस कर रहे हैं कि विशेष रूप से पवित्रता के विषय से जुड़े कुछ बिन्दुओं का उल्लेख करें। युवाओं, जिनकी ओर धर्मसंरक्षक ने अपने आग्रह को सबसे ज्यादा उत्कट रूप से दिष्ट किया था, के दिल और दिमाग पर असर डालने वाली शक्तियाँ सचमुच घातक हैं, शुद्ध और पवित्र बने रहने के प्रबोधन केवल एक सीमित सीमा तक ही इन शक्तियों का सामना करने में, उनकी सहायता करने में सफल होंगे। इस सम्बन्ध में जिस बात को समझने की आवश्यकता है वह यह है कि अभिभावकों द्वारा अपने स्वयं के जीवन के लिये किये गये चयनों से युवा मन किस सीमा तक प्रभावित होते हैं, जब उनके ऐसे चयन, चाहे कितने ही अनजाने में, चाहे कितने ही भोलेपन से, दुनिया की लालसाओं को अनदेखा कर देते हैं -- जैसे कि सत्ता की प्रशंसा, रुतबे की पूजा, विलासिताओं से प्रेम, ओछे कामों के प्रति आसक्ति, हिंसा का गुणगान, और आत्म-संतुष्टि के लिये जुनून। यह स्वीकार किया जाना चाहिये कि वह अलगाव और निराशा जिनके कारण इतने सारे लोग कष्ट भुगत रहे हैं, एक ऐसे वातावरण की उपज हैं जो एक सर्वव्यापी भौतिकवाद से शासित हैं। और इस संदर्भ में मित्रों को बहाउल्लाह के इस कथन की जटिलताओं को समझना चाहिये कि "वर्तमान व्यवस्था" अवश्य "समाप्त" हो जायेगी और इसके स्थान पर एक नई व्यवस्था स्थापित होगी।" आज पूरी दुनिया में, युवा लोग इस योजना के सबसे उत्साही समर्थक हैं और प्रभुधर्म के सबसे उत्कट विजेता हैं; हमें पक्का विश्वास है कि वर्षानुवर्ष उनकी संख्या बढ़ती जायेगी। ऐसा हो जाये कि उनमें से प्रत्येक, एक पवित्रता से सुशोभित जीवन के पारितोषण को जान जाएँ और पवित्र माध्यम से बहने वाली शक्तियों से सहायता प्राप्त करना सीख लें।

34. इसके बाद धर्मसंरक्षक ने पूर्वाग्रह के विषय को सम्बोधित किया, और साफ़तौर पर कहा कि प्रभुधर्म के अनुयायियों के बीच “कोई भी विभाजन या दरार” “उसके उद्देश्य, सिद्धान्तों, एवं आदर्शों के बिल्कुल विरुद्ध है।” उन्होंने स्पष्ट किया कि मित्रों को “भिन्न जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, या वर्ण के लोगों के साथ अपने व्यवहार में पूरी तरह से पूर्वाग्रह से मुक्त होना चाहिये।” उन्होंने उस जातीय पूर्वाग्रह के विशेष प्रश्न की आगे विस्तार में चर्चा की “जिसकी घात”, उन्होंने बताया “अमरीकी समाज के पूरे सामाजिक ढाँचे को ही कुतर चुकी थी और उस पर हमला” कर चुकी थी, तथा जिसे, उन्होंने उस समय दावा किया, “बहाई समुदाय के समक्ष उसके विकास के वर्तमान चरण में आने वाला सबसे महत्वपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण मुद्दा समझा जाना चाहिये।” इस चुनौती का सामना करने के लिये अमरीकी राष्ट्र एवं उसमें विकसित हो रहे बहाई समुदाय द्वारा किये गये प्रयासों की शक्तियों और कमजोरियों से स्वतंत्र, यह सच्चाई अपने स्थान पर कायम है कि सभी प्रकार के पूर्वाग्रह-जातीयता के, वर्ग के, नस्ल के, लिंग के, धार्मिक मान्यता के -- मानवजाति पर एक मजबूत पकड़ बनाये हुए है। जबकि यह सच है कि सार्वजनिक परिसंवाद के स्तर पर उन झूठी बातों का खण्डन करने में उल्लेखनीय प्रगति की गयी है जो किसी भी रूप में पूर्वाग्रह उत्पन्न करती हैं, तथापि, यह आज भी समाज के ढाँचों में बसा हुआ है और सुनियोजित ढंग से व्यक्ति के चैतन्य पर अंकित किया जाता है। सभी के समक्ष यह स्पष्ट होगा कि वैश्विक योजनाओं की वर्तमान श्रृंखला द्वारा गतिवान की गयी प्रक्रिया, किसी वर्ग या धार्मिक पृष्ठभूमि पर ध्यान दिये बगैर, किसी जातीयता या नस्ल की चिंता किये बगैर, किसी लिंग या सामाजिक दर्जे का विचार किये बगैर, अपने तरीकों में, तथा उपयोग में लायी जाने वाली अपनी पद्धतियों में प्रत्येक मानव समूह में क्षमता का निर्माण करने का प्रयास करती है, ताकि वे उठ खड़े हों और सभ्यता की प्रगति में योगदान दें। हम प्रार्थना करते हैं कि जैसे-जैसे यह प्रक्रिया धीरे-धीरे प्रकट हो, वैसे-वैसे एक समूह द्वारा दूसरे पर अत्याचार करने के लिये मानवजाति द्वारा अपने शैशवकाल की लम्बी अवधि के दौरान बनाये गये प्रत्येक साधन को बेकार कर देने का इसका सामर्थ्य सिद्ध हो जाये।

35. प्रशिक्षण संस्थान से जुड़ी संयोजक प्रक्रिया, निःसंदेह उन आध्यात्मिक स्थितियों को बढ़ावा देने में सहायता कर रही हैं जिनका उल्लेख धर्मसंरक्षक ने द एडवेन्ट ऑफ डिवाइन जस्टिस में किया था, और इनके साथ-साथ ऐसी कई अन्य स्थितियों को भी

बढ़ावा देने में सहायता कर रही है जिनका उल्लेख पावन लेखों में किया गया है, जो बहाई समुदाय के जीवन की पहचान होनी चाहिये -- इनमें से कुछ का उल्लेख किया जाये, तो एकता की वह भावना जो मित्रों को सजीव करेगी, प्रेम के वे बंधन जो उन्हें बाँधेंगे, संविदा में वह दृढ़ता जो उन्हें बनाए रखेगी, और वह भरोसा एवं विश्वास जो उन्हें दिव्य सहायता की शक्ति पर रखना ही होगा। यह बात विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है कि ऐसी महत्वपूर्ण विशेषताएँ एक ऐसे वातावरण में सेवा की क्षमता निर्मित करने के संदर्भ में विकसित की जाती है; जो सुनियोजित कार्य को बढ़ावा देता हो। इस वातावरण को बढ़ावा देने में, सहायक मण्डल सदस्य एवं उनके सहायकों को दो आधारभूत, परस्पर जुड़े नियमों के महत्व को समझने की आवश्यकता है: एक ओर, बहाउल्लाह के प्रकटीकरण द्वारा मन में बैठाया गया आचरण का उच्च स्तर किसी समझौते को स्वीकार नहीं कर सकता; इसे कदापि गिराया नहीं जा सकता और सभी को इसकी उत्कृष्ट ऊँचाइयों पर अपनी दृष्टि केन्द्रित करनी चाहिये। दूसरी ओर यह स्वीकार किया जाना चाहिये कि मनुष्य होने के नाते हम पूर्णता से बहुत दूर हैं; सभी से जो अपेक्षित है वह है सच्चा दैनिक प्रयास। दम्भ से दूर रहने की आवश्यकता है।

* * *

36. एक पवित्र बहाई जीवन की आध्यात्मिक आवश्यकताओं के अलावा, सोच की ऐसी आदतें होती हैं जो वैश्विक योजना के प्रकटन को प्रभावित करती हैं, और इनके विकास को संस्कृति के स्तर पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। साथ ही, ऐसी प्रवृत्तियाँ भी होती हैं जिन पर धीरे- धीरे काबू पाने की आवश्यकता है। इनमें से कई प्रवृत्तियाँ व्यापक समाज में प्रचलित तरीकों द्वारा सुदृढ़ बनायी गई हैं, जिनका बहाई गतिविधि में प्रवेश कर लेना पूर्णतया अकारण नहीं होता है। इस सम्बन्ध में मित्रों द्वारा जिस चुनौती का सामना किया जा रहा है उससे हम अनजाने नहीं हैं। उनका आह्वान किया जाता है कि वे समाज के जीवन में अधिक से अधिक सम्मिलित हों, उसके शैक्षणिक कार्यक्रमों से लाभ प्राप्त करें, उसके व्यापारों एवं व्यवसायों में उत्कृष्टता प्राप्त करें, उसके उपकरणों का अच्छी तरह से प्रयोग करना सीखें, और उसकी कलाओं एवं विज्ञानों को आगे बढ़ाने में जुट जाएँ। इसके साथ-साथ, उन्हें एक ऐसे पैमाने पर, जो पहले कभी नहीं देखा गया, समाज में परिवर्तन लाने के, उसकी संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं को नये रूप में ढालने के प्रभुधर्म के उद्देश्य को अपनी आँखों से ओझल नहीं होने देना चाहिये। इस उद्देश्य के लिये, उन्हें सोचने और

करने के वर्तमान तरीकों की अपर्याप्ताओं के प्रति तीक्ष्ण रूप से जागरूक बने रहना चाहिये -- लेकिन यह, थोड़ी सी भी श्रेष्ठता महसूस किये बगैर, गोपनीयता या अलगाव का भाव अपनाये बगैर और समाज के प्रति अनावश्यक रूप से एक आलोचनात्मक दृष्टि अपनाये बगैर। इस सम्बन्ध में कुछ विशेष बिंदु हैं जिनका हम उल्लेख करना चाहते हैं।

37. यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि पाँच-वर्षीय योजना से जुड़े विश्व न्याय मन्दिर के संदेशों का अध्ययन मित्रगण इतने परिश्रमशील ढंग से कर रहे हैं। प्राप्त किये गये मार्गदर्शन को अमल में लाने के, तथा अनुभव से सीखने के उनके प्रयासों के दौरान उत्पन्न होने वाली परिचर्चा का स्तर प्रभावशाली है। फिर भी, हम इस बात पर ध्यान देने को बाध्य हैं कि जिन क्षेत्रों में मित्रगण उस समूची परिकल्पना को समझने की कोशिश कर रहे हैं, जो इन संदेशों में बतायी गयी है, वहाँ उपलब्धियाँ अधिक स्थायी होती हैं, जबकि कठिनाइयाँ प्रायः तब उत्पन्न होती हैं जब वाक्याँशों और कथनों को संदर्भ से बाहर निकाल कर अलग-अलग टुकड़ों के रूप में देखा जाता है। प्रभुधर्म की संस्थाओं और एजेन्सियों को अनुयायियों की सहायता करनी चाहिये कि वे विश्लेषण करें किन्तु निम्नीकरण नहीं, अर्थ पर विचार करें किन्तु शब्दों पर न टिकें, कार्य के विशेष क्षेत्रों की पहचान करें किन्तु उन्हें खण्डों में न बाँटें। हम समझते हैं कि यह कोई छोटा कार्य नहीं है। समाज अधिकाधिक रूप से नारों में बात करता है। हम आशा करते हैं कि अध्ययनवृत्त कक्षाओं में पूर्ण एवं जटिल विचारों के साथ काम करने तथा समझ प्राप्त करने की जो आदतें मित्रगण बना रहे हैं, उन्हें गतिविधि के विभिन्न क्षेत्रों में भी ले जाया जायेगा।

38. एक सम्पूर्ण विषय को एक या दो आकर्षक वाक्यों में निम्नीकृत करने की आदत के साथ निकट से जुड़ी है द्विविधा देखने की वह प्रवृत्ति, जहाँ वास्तव में कोई द्विविधा नहीं होती। यह महत्वपूर्ण है कि जो विचार एक ससंजक पूर्ण-इकाई का हिस्सा हों उन्हें एक दूसरे के विरोध में न रखा जाये। अपनी ओर से लिखे गये एक पत्र में शोग़ी एफ़ेन्दी ने चेतावनी दी थी कि: “हमें शिक्षाओं को एक महान, संतुलित इकाई के रूप में देखना चाहिये -- भिन्न-भिन्न अर्थों वाले दो प्रभावशाली वाक्यों को ढूँढकर एक-दूसरे के विरोध में नहीं रखना चाहिये; इन दोनों को जोड़ने वाली कड़ियाँ कहीं न कहीं बीच में होती हैं।” हम यह देख कर बहुत प्रोत्साहित हुए हैं कि जैसे-जैसे योजना के प्रावधानों की समझ बढ़ी है, वैसे-वैसे पूर्व की कई गलतफहमियाँ दूर हुई हैं। विस्तार एवं सुगठन, व्यक्तिगत कार्य एवं सामूहिक अभियान, आंतरिक आचरण का परिष्करण एवं निःस्वार्थ सेवा के प्रति समर्पण -- बहाई-जीवन के इन पहलुओं के बीच सामंजस्यपूर्ण सम्बन्ध को अब आसानी से

स्वीकार कर लिया गया है। यह जानकर हमें बराबर की प्रसन्नता प्राप्त हुई कि मित्र सावधान हो गये हैं कि कहीं नये विरोधाभास उनकी सोच में व्याप्त न हो जाएँ। वे भलीभाँति जानते हैं कि एक विकास कार्यक्रम के विविध तत्व पूरक होते हैं। गतिविधियों को और उनका समर्थन करने वाली एजेन्सियों को एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में देखने की प्रवृत्ति, एक ऐसी प्रवृत्ति जो व्यापक समाज में बहुत आम है, से समुदाय द्वारा बचा जा रहा है।

39. अन्त में, संस्कृति में वह उल्लेखनीय प्रगति, जिस पर हमने विशेष रुचि के साथ ध्यान दिया है, प्रक्रिया के संदर्भ में सोचने की क्षमता में वृद्धि के कारण विशिष्ट है। प्रभुधर्म की प्रारम्भिक राष्ट्रीय योजनाओं से जुड़े, धर्मसंरक्षक के सबसे आरम्भिक संदेशों के ध्यानपूर्वक पठन से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि अनुयायियों को प्रारम्भ से ही उन व्यापक प्रक्रियाओं के प्रति सदा जागरूक रहने को कहा गया है जो उनके कार्यों को परिभाषित करती हैं। फिर भी, एक ऐसे विश्व में जो घटनाओं के प्रचार या सर्वश्रेष्ठ परियोजनाओं के प्रचार पर, एक ऐसी मानसिकता के साथ अधिकाधिक रूप से ध्यान केन्द्रित करने लगी है जो इनसे उत्पन्न होने वाले अपेक्षा एवं उत्तेजना के बोध से संतुष्टि प्राप्त करती है, दीर्घकालिक गतिविधि के लिये आवश्यक समर्पण के स्तर को बनाए रखने के लिये काफी प्रयास की आवश्यकता होती है। बहाई समुदाय का विस्तार और सुगठन कई ऐसी प्रक्रियाओं को सम्मिलित करता है जो एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं और जिनमें से प्रत्येक प्रक्रिया, बहाउल्लाह की एक नई विश्व व्यवस्था की परिकल्पना की ओर मानवजाति के गमन में अपना योगदान देती है। किसी भी निर्धारित प्रक्रिया से जुड़ी कार्यप्रणाली में सामायिक घटनाओं के आयोजन का प्रावधान होता है, और समय-समय पर, गतिविधियाँ एक स्पष्ट शुरुआत और निश्चित अन्त वाली परियोजना का रूप अपनाती है। लेकिन, यदि एक प्रक्रिया के स्वाभाविक रूप से प्रकट होने के दौरान उस पर घटनाएँ लाद दी जाएँ, तो वे उसके तर्कसंगत विकास को अस्त-व्यस्त कर देंगी। यदि एक क्लस्टर में लागू की जाने वाली परियोजनाओं को, वहाँ खुल रही प्रक्रियाओं की प्रत्यक्ष आवश्यकताओं के अधीन नहीं किया गया, तो इन प्रक्रियाओं से बहुत कम परिणाम प्राप्त होंगे।

40. योजना के सफल कार्यान्वय के लिए एक-दूसरे को प्रभावित करने वाली उन प्रक्रियाओं के स्वरूप को, जो प्रभुधर्म के विस्तार एवं सुगठन को जन्म देती हैं, समग्रता में समझना अत्यावश्यक है। ऐसी समझ को बढ़ावा देने के अपने प्रयास में, आप और आपके सहायकों को प्रोत्साहित किया जाता है कि आप उस अवधारणा को ध्यान में रखें जो वर्तमान

वैश्विक उद्यम के आधार में निहित है, और वास्तव में, दिव्य योजना के प्रत्येक चरण के केन्द्र में ही निहित है, अर्थात् यह, कि प्रगति तीन प्रतिभागियों के विकास के माध्यम से प्राप्त होती है -- व्यक्ति, संस्थाएँ एवं समुदाय। सम्पूर्ण मानव इतिहास में हर मोड़ पर इन तीनों के बीच पारस्परिक क्रियाएँ कठिनाइयों से भरी रही हैं, जहाँ व्यक्ति स्वतंत्रता के लिये चीत्कार करता है, संस्थाएँ अधीनता माँगती हैं, और समुदाय वरीयता का दावा करता है। प्रत्येक समाज ने किसी न किसी रूप में उन सम्बन्धों को परिभाषित किया है जो इन तीनों को आपस में बाँधते हैं, जिनसे उथलपुथल के साथ गुंथी हुई स्थिरता की अवधियाँ उत्पन्न होती हैं। आज, अवस्थांतर के इस युग में, जब मानवजाति अपनी सामूहिक परिपक्वता को प्राप्त करने का संघर्ष कर रही है, तब इस प्रकार के सम्बन्ध -- बल्कि, व्यक्ति की, सामाजिक संस्थाओं की, एवं समुदाय की अवधारणा ही -- लगातार इतने सारे संकटों के आक्रमण का शिकार बन रही है कि इनकी गिनती नहीं की जा सकती। प्राधिकार का विश्वव्यापी संकट इसका पर्याप्त सबूत है। इसके दुरूपयोग इतने दुःखदाई रहे हैं, और जो संदेह एवं आक्रोश यह अब उत्पन्न कर रहा है वह इतना गहरा है कि अब दुनिया अधिकाधिक रूप से अशासनीय होती जा रही है -- एक ऐसी स्थिति जो सामुदायिक बंधनों के कमजोर पड़ने से और भी खतरनाक बन गयी है।

41. बहाउल्लाह का प्रत्येक अनुयायी अच्छी तरह से जानता है कि 'उनके' प्रकटीकरण का उद्देश्य एक नई सृष्टि उत्पन्न करना है। जैसे ही "उनके अधरों से पहला आह्वान निकला, वैसे ही सम्पूर्ण सृष्टि आमूल परिवर्तित हो गयी, और वे सभी जो स्वर्गों में हैं और वे सभी जो धरती पर हैं गहन रूप से प्रभावित हो गये।" दिव्य योजना के तीन नायक -- व्यक्ति, संस्थाएँ और समुदाय -- 'उनके' प्रकटीकरण के सीधे प्रभाव में आकार प्राप्त कर रहे हैं और प्रत्येक की एक ऐसी नई अवधारणा उभर रही है जो एक परिपक्व मानवजाति के लिये उपयुक्त है। इन्हें बांधने वाले सम्बन्ध भी एक गहरे परिवर्तन से गुजर रहे हैं, तथा सभ्यता-निर्माण की ऐसी शक्तियों को अस्तित्व में ला रहे हैं जो केवल 'उनके' आदेश के अनुसार प्रकट हो सकती थीं। एक आधारभूत स्तर पर ये सम्बन्ध उस सहयोग एवं पारस्परिक आदान-प्रदान के कारण विशिष्ट हैं, जो ब्रह्माण्ड को शासित करने वाली परस्पर सम्बद्धता का प्रकट रूप हैं। अतः "व्यक्तिगत लाभों और स्वार्थपूर्ण फायदों" की चिन्ता किये बगैर व्यक्ति स्वयं को "उस सर्व-सम्पन्न ईश्वर के सेवकों में से एक" समझने लगता है जिसकी एकमात्र इच्छा 'उनके' नियमों का अनुपालन है। इस प्रकार मित्रगण इस बात को समझने लगते हैं कि "भावना की दौलत, सद्भावना एवं प्रयास की प्रचुरता"

बहुत कम लाभ प्राप्त कराते हैं जब उनके प्रवाह को उचित माध्यमों के जरिये दिष्ट न किया जाता", कि "व्यक्ति की बंधनमुक्त स्वतंत्रता को परस्पर परामर्श एवं त्याग से संतुलित करना चाहिये", तथा "पहल एवं उद्यम करने की भावना को, संगठित कार्य की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता की अधिक गहरी समझ से, तथा सर्वहित के प्रति अधिक पूर्ण समर्पण के द्वारा सुदृढ़ किया जाना चाहिये।" और इस प्रकार, गतिविधि के उन क्षेत्रों के लिये, जिनमें व्यक्ति सर्वाधिक अच्छी पहल ले सकते हैं और वे क्षेत्र जो केवल संस्थाओं के दायरे में हैं, सभी आसानी से निर्णय ले सकते हैं। मित्र अपनी संस्थाओं के निर्देशों का "दिल और जान" से पालन करते है ताकि जैसा कि अब्दुल-बहा समझाते हैं, "चीजों को सही ढंग से जमाया एवं सुव्यवस्थित किया जा सके।" ऐसी आज्ञाकारिता, अवश्य ही, अंधी आज्ञाकारिता नहीं होती; बल्कि एक ऐसी आज्ञाकारिता होती है जो उस परिपक्व मानवजाति के उभरने का चिह्न है, जो 'बहाउल्लाह की विश्व व्यवस्था' जैसी दूरगामी प्रणाली के आशयों को समझती है।

42. और उस शक्तिशाली व्यवस्था की संस्थाओं पर सेवा देने के लिये इन प्रज्ज्वलित आत्माओं की पंक्तियों में से जिन लोगों का आह्वान किया जाता है, वे धर्मसंरक्षक के इन शब्दों को भलीभाँति समझते हैं कि "उनका काम आदेश देना नहीं, बल्कि परामर्श करना है, और न केवल आपस में परामर्श करना, बल्कि जहाँ तक सम्भव हो, उन मित्रों के साथ परामर्श करना जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।" वे ऐसा "कभी नहीं" सोचेंगे कि वे प्रभुधर्म की काया के ऐसे केन्द्रीय आभूषण हैं, जो क्षमता या योग्यता में तात्विक रूप से दूसरों से श्रेष्ठ हैं तथा 'उसकी' शिक्षाओं एवं सिद्धान्तों के एकमात्र प्रवर्तक हैं।" वे अपने कार्यों की ओर "अत्यधिक नम्रता के साथ" बढ़ते हैं तथा "अपने खुले विचारों, न्याय एवं कर्तव्य के अपने उच्च बोध, अपनी स्पष्टवादिता, अपने विनय, मित्रों के, प्रभुधर्म के और मानवजाति के कल्याण एवं हितों के प्रति अपने सम्पूर्ण समर्पण के द्वारा, वे न केवल उन लोगों का विश्वास और सच्चा समर्थन एवं आदर जीतने का प्रयास करते हैं जिनकी वे सेवा करते हैं, बल्कि उनका सम्मान तथा सच्चा स्नेह भी।" इस तरह निर्मित किये गये वातावरण में, अधिकार से विभूषित संस्थाएँ स्वयं को मानव क्षमता को पोषित करने वाले ऐसे साधनों के रूप में देखती हैं, जो यह सुनिश्चित करते हैं कि यह क्षमता, उपयोगी एवं सराहनीय मार्गों पर प्रकट होती जाएँ।

43. ऐसे व्यक्तियों और ऐसी संस्थाओं से बना हुआ 'सर्वमहान नाम' का यह समुदाय, आध्यात्मिक रूप से आवेशित वह क्षेत्र बन जाता है जिसमें एकीकृत कार्य से शक्तियों में वृद्धि होती है। यही वह समुदाय है जिसके बारे में अब्दुल-बहा लिखते हैं: "जब कोई भी आत्माएँ सच्ची अनुयायी बन जाएँगी तो वे एक-दूसरे के साथ आध्यात्मिक सम्बन्ध प्राप्त कर लेंगी और एक ऐसी कोमलता प्रदर्शित करेंगी जो इस संसार की नहीं है। वे सभी, दिव्य प्रेम के एक घूँट से प्रफुल्लित हो उठेंगी और उनका यह मिलन, यह सम्बन्ध भी सदा बना रहेगा। अर्थात् ऐसी आत्माएँ, जो खुद को भुला देंगी, मानवजाति की त्रुटियों से स्वयं को मुक्त कर लेंगी, तथा मानव दासत्व से स्वयं को मुक्त कर लेंगी, निश्चित रूप से, एकता की स्वर्गिक भव्यताओं से प्रकाशित हो उठेंगी और उस जगत में, जो कभी नहीं मरता, सच्चा मिलन प्राप्त करेंगी।"

44. जब अधिकाधिक ग्रहणशील आत्माएँ प्रभुधर्म को अपनाएँगी तथा उन लोगों के साथ अपना योगदान देंगी जो वर्तमान में चल रहे वैश्विक उद्यम में पहले से ही भाग ले रहे हैं, तो निश्चित रूप से व्यक्ति, संस्थाओं एवं समुदाय के विकास और गतिविधि को आगे की ओर एक शक्तिशाली बढ़ावा मिलेगा। ऐसा हो जाये कि इन तीन नायकों के बीच बहाउल्लाह के अनुयायियों द्वारा गढ़े जा रहे सम्बन्धों में एक घबराई हुई मानवजाति को सामूहिक जीवन एक ऐसा प्रतिमान नज़र आये जो उसे उसकी उच्च नियति की ओर आगे बढ़ायेगी। पावन समाधियों पर यही हमारी उत्कट प्रार्थना है।

-विश्व न्याय मंदिर